श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त-२०१९

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. सत्य वचन के कारण ..... आज भी जिंदा है ।
२. शृंखला से बंधे दीपक समान ..... अवधिज्ञान है ।
३. महामुनियों की ..... को प्राप्त कराने वाला ऐसा, श्री अजितनाथ तथा श्री शांतिनाथ का भी सतत नमन मोक्ष के कारण भूत हो ।
४. मानव का भव ..... के लिये मिला है ।
५. विषम संख्या हो वहाँ एक ही संख्या से ..... खोजा जाता है ।
६. ..... अनंत वस्तु बताता है और अनंतकाल रहने वाला है ।
७. ज्ञात पेठ और अच्छी भूमि में उत्पन्न ..... होना चाहिये ।
८. किसी के साथ विस्वासघात किया हो वह ..... अतिचार जानना ।
९. गोल वस्तु का घेरा यह उस वस्तु की ..... है ।
१०. उत्कृष्ट से संपूर्ण लोक में स्थित रुपी द्रव्यों को देखकर अचानक नष्ट हो जाय वह ..... है ।
११. मूर्तिमंत ऐसे कर्म से ..... को अनुग्रह या उपघात कैसे संभव है ।
१२. ग्रहण किये हुए नियमो के पालन में ..... विकसित करता है ।
१३. प्रतिहारी जैसा ..... कर्म है ।
१४. दूसरों को गलत उपदेश देना यह ..... अतिचार है ।
१५. जिसका आश्रय लेकर कर्म रुपी मैल धोया जाय उसे ..... कहते हैं ।
१६. अमूर्त ऐसे ज्ञान को मदिरा वगैरह पदार्थों से ..... प्रत्यक्ष होते देखा गया है ।
१७. शांतिनाथ भ. ..... स्वभाव को धारण करने वाले हैं ।
१८. अपनी ऊँची आवाज से पापकारी संसारी जागे और स्वयं ही के आरंभ के कामों में प्रवर्तित हो जाय तो उन सबके दोषों का खुद भागीदार होता है उससे ..... की प्राप्ति होती है ।
१९. परमात्मा द्वारा प्ररुपित ..... को पाने असत्य का साथ छोड सत्य के मार्ग पर दौड जा ।
२०. पूर्वानुयोग ..... में एक मुख्य अधिकार है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. जंबुद्वीप की परिधी की सूक्ष्म गिनती कहाँ तक करना कि शेष ५४ आये ?
२. जो स्वयं के हक का नहीं है उस पर अपनी सत्ता जमाना क्या है ?
३. सरलता निर्लोभता के भंडार रुप कौन से भगवान हैं ?
४. तिर्च्छा पवन बहता है तब कौन सा तत्व समझना ?
५. प्रभु के अमृतमय वचनों से क्या दूर हो गया जिससे अग्निभूति का अभिमान दूर हो गया ?
६. कौन से सूक्ष्म निगोदिया जीव को जघन्य श्रुत ज्ञान होता है ?
७. चोरी का समावेश किसमें होता है ?
८. चौदह पूर्व का समावेश किस अधिकार में होता है ?
९. कर्म रुपी मैल कौन से जल से धुलता है ?
१०. अशाश्वत पदार्थ कैसे है ?
११. अग्निभूति गणधर ने अंतिम संलेषना कहाँ करी ?
१२. किस कारण से आत्मा मूढ चेतना में रहते हुए आडा तेडा बोला जाय ?
१३. अननुगामी अवधिज्ञान को कैसा क्षयोपशम है ?
१४. कैसे प्राणीयों का जागना कल्याणकारी होता है ?
१५. चतुष्पद के बारे में झूठ बोलने का नियम किस व्रत में आता है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) निद्दा २) कोसतिग ३) दिसउ ४) जाइ ५) पडिवाई ६) उस्सास ७) निचिअं ८) पज्जय ९) महिअं १०) वित्ति
११) भुविज १२) सेया १३) अज्जव १४) भयणीअे १५) मम १६) विमग्गह १७) अभिग्गहा १८) रिउमई
१९) ज्ञातवृक्ष्यं २०) भुयग

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) विराधना दोष	१) सोपनक
२) करचोरी	२) वालाग्र
३) अनुगामी	३) झूठी साक्षी
४) ब्राम्ही	४) अदत्तादान
५) विष्कम्भ	५) पच्चखाण
६) रिश्वत	६) दर्शन शुद्धि
७) अभिग्रह	७) चक्षु
८) नागकुमार	८) चौडाई
९) यव	९) अनुग्रह
१०) संगतक	१०) असुर

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. जंबुद्वीप की परिधी का वर्गमूल निकालते ध्रुव भाजक संख्या कितनी है ?
२. प्रतिपत्ति श्रुत याने कितनी मार्गणा का ज्ञान ?
३. अग्निभूति कितने वर्ष की उम्र में सर्वज्ञ बने ?
४. द्रव्य स्नान करते श्रावकों ने कितनी बाबतों का ख्याल रखना चाहिये ?
५. कितने बडे झूठ बोलने का नियम श्रावक को लेना चाहिये ?
६. कितने रोग वाले रोगीओं को दातून का निषेध है ?
७. कितने महिने का संवत्सर होता है ?
८. रात के पिछले दो घडी में देखा स्वप्न कितने समय में फल देता है ?
९. कौनसी संख्या का वर्गमूल बारह है ?
१०. कर्म विज्ञान में ज्ञान के कुल कितने भेद हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. अज्ञान अवस्था में हो चुके पापों का प्रायश्चित हो सकता है ।
२. सोने की थाली में रुपा की कील की तरह ऐसे धुरंधर विद्वान के मन में एक शंका हुई ।
३. दातुन अपनी छोटी अंगुली जितना मोटा होना चाहिये ।
४. विभंगज्ञान अवधिज्ञान का ही प्रकार है ।
५. असत्य में से अनेक अयोग्य कामना निर्माण होती है ।
६. सम संख्या हो वहाँ एक ही संख्या से वर्गमूल खोजा जाता है ।
७. तीर्थ प्रवर्तन करने वाले शांतिनाथ भगवान को मैं प्रणाम करता हूँ ।
८. चोर को चोरी करने के ठिकाने बताना तस्कर प्रयोग अतिचार जानना ।
९. परिकमी यह दृष्टिवाद का एक मुख्य अधिकार है ।
१०. माया लोभ से उत्पन्न हुए दुःस्वप्न कहलाते हैं ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जाने अनजाने में संपति के मोह में फंसे हुए हम कभी नहीं करने जैसे अकार्य कर बैठते हैं ।
२. कर्म कभी नजर ही नहीं आते, तो भी कर्म मानने ही किसलिये ?
३. द्रव्य प्रमाण वगैरे अनुयोग कहलाते हैं - जिससे वस्तु या तत्व की सूक्ष्म विचारणा हो सके ।
४. वर्गमूल निकालने के लिये भागाकार में दो संख्या टुकडो टुकडो से उतारनी होती है ।
५. "नहीं मां मैंने सभी जगह इसे स्नान कराया है, फिर भी इसकी कटुता नहीं गई"।
६. राज दरबार में दंडित होना पडे, ऐसी भाषा तो श्रावक नाम धारण करके कभी भी बोले नहीं ।
७. क्या मैं और मेरे ज्ञानी भगवंत मेरे पाप को जानते नहीं ?
८. मानव का भव आत्मशुद्धि के लिये ही मिला है ।
९. मति वगैरह चार ज्ञान क्षायोपशमिक भाव के ही हैं ।
१०. जो तुम दुःखो का निवारण तथा सुखों का कारण ढूंढ रहे हो तो भाव से श्री अजितनाथ तथा शांतिनाथ के अभय करने वाले शरण को प्राप्त करो ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. अदत्तादान के लिये श्रावक के नियम और जयणा । २) मनःपर्यवज्ञान ३) निद्रा विच्छेद के साथ श्रावक की सावधानी ।
४. मृषावाद विरमण व्रत के अतिचार समझाओ । ५) श्री अजितनाथ भ. के अलग अलग विशेषण समझाओ ।

જવાબ પત્ર નીચે ના સરનામે મોકલશોજી
શત્રુંજય એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર, સ્ટેશન રોડ, ચાળીસગામ – ૪૨૪ ૧૦૧.
જી. જળગામ. મો. ૯૦૨૮૨૪૨૪૮૪
સાચા પરિણામ અને સાચા ઉત્તર માટે વેબ સાઈટ www.shatrunjayacademy.com